

भारत के खिलाफ चीन की 'जल बम' की रणनीति

प्रलम्बिस के लयि:

'जल बम' की अवधारणा

मेन्स के लयि:

भारत के खिलाफ चीन की 'जल बम' की रणनीति

चरचा में क्यो?

हाल ही में भारत-चीन संबंधों में [वर्ष 1962 के युद्ध](#) के बाद से सबसे अधिक टकराव देखने को मिला है, जसिने दोनों देशों के सीमावर्ती क्षेत्रों में आधारभूत अवसंरचना के नरिमाण के रणनीतिक महत्त्व को फरि से उजागर किया है। यारलुंग (ब्रह्मपुत्र) नदी पर चीन द्वारा नरिमति बड़े बाँधों ने भारतीय अधिकारियों और स्थानीय लोगों की चलि को और अधिक बढ़ा दिया है।

प्रमुख बदि:

- चीन द्वारा जल-ऊर्जा के दोहन के लयि चलाए जा रहे इन त्वरति कार्यक्रमों ने न केवल हिमालयन क्षेत्र में गंभीर पारस्थितिकि समस्याओं को बढ़ा दिया है, अपति स्थानीय लोगों के समक्ष आजीविका संबंधी अनेक चुनौतियों उत्पन्न कर दी हैं।
- चीन द्वारा 'जल बम' की रणनीति न केवल भारत के खिलाफ अपनाई जा रही है अपति [मेकांग नदी](#) पर अनेक जलविद्युत योजनाओं का नरिमाण करके पूरव में थाईलैंड, लाओस, वयितनाम और कंबोडिया के खिलाफ भी इस रणनीति को अपनाया गया था। मेकांग नदी को इन देशों की जीवन रेखा माना जाता है।



'जल बम' की अवधारणा:

- 'जल बम' (Water Bomb) की अवधारणा के तहत किसी देश द्वारा अपने पड़ोसी देश पर हमला करने या प्रहार करने के उद्देश्य से अत्यधिक मात्रा में जल को बाँधों में संग्रहीत किया जाता है तथा युद्ध के समय इसे छोड़ दिया या रोक दिया जाता है ताकि नदी के बहाव द्वारा नचिले क्षेत्रों में व्यापक आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय नुकसान किया जा सके।
- तबित से उद्गमति आठ प्रमुख नदियों पर चीन ने पछिले दो दशकों में 20 से अधिक बाँधों का नरिमाण किया है और उनमें से कुछ को वास्तव में 'मेगा बाँध' कहा जा सकता है।

- इसके अलावा चीन की तेरहवीं पंचवर्षीय योजना के अनुसार, तबिबत से उदगमति नदियों पर चीन और अधिक पनवदियुत परियोजनाओं के नरिमाण की योजना बना रहा है। चीनी मीडिया रपिर्टों के अनुसार, (अधिकारिक आँकड़े उपलब्ध नहीं) चीन इन नदियों पर वभिन्नि आकार के 40 और बाँधों का नरिमाण करेगा।

भारत के लिये चतिनीय क्यौं?

कृषिउत्पादकता पर प्रभाव:

- बड़े बाँधों के नरिमाण से संपूर्ण नदी बेसनि क्षेत्र प्रभावति होगा, जो ब्रह्मपुत्र बेसनि के व्यापक अवनयन का कारण बन सकता है। नदी द्वारा प्रवाहति अवसादों को बाँधों द्वारा अवरुद्ध कर दिया जाएगा, जिससे मृदा की गुणवत्ता और कृषिउत्पादकता में गरिावट आएगी।

पारसिथतिकीय संवेदनशीलता:

- दूसरा, ब्रह्मपुत्र बेसनि दुनिया के सबसे अधिक पारसिथतिकीय संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है। यह वशि्व के 34 जैविकि हॉटस्पॉटों में से एक है। इस क्षेत्र में फ्लोरा और फौना की अनेक प्रजातियों सहति अनेक स्थानिकि प्रजातियों भी पाई जाती हैं। उदाहरण के लिये [काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान](#) में 35 स्तनधारी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जनिमें से 15 को IUCN की रेड सूची में संकटापन्न प्रजातियों के रूप सूचीबद्ध किया गया है। 'गंभीर रूप से लुप्तप्राय' गंगा नदी डॉल्फनि भी ब्रह्मपुत्र नदी में पाई जाती है।

बाँधों की भूकंप के प्रतिसुभेद्यता:

- भूकंप-वजिज्ञान के अनुसार, हिमालय को भूकंपीय गतिविधियों के लिये सबसे अधिक संवेदनशील माना जाता है। भूकंप-जनति भूस्खलन क्षेत्र के लिये प्रमुख खतरा है। उदाहरण के लिये वर्ष 2015 में नेपाल में आए भूकंप के कारण कई बाँध और अन्य अवसंरचनाएँ नष्ट हो गई थीं।

डाउन-स्ट्रीम में रहने वाले लोगों की आजीविका:

- चीन द्वारा नरिमति व्यापक अवसंरचना परियोजनाओं (वशिषकर बाँधों से) का आकार बहुत बड़ा है। यह नदी के डाउन-स्ट्रीम में रहने वाली आबादी के लिये एक प्रमुख खतरा है। भारत क्षेत्र के ब्रह्मपुत्र के बेसनि में लगभग दस लाख के करीब लोग रहते हैं। हिमालय पर चलाई जा रही इन मेगा बाँध परियोजनाओं के कारण सैकड़ों लोगों के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है।
- अगर चीन बिना किसी चेतावनी के इन नदियों का जल छोड़ता है, तो इससे क्षेत्र में वनिाशकारी बाढ़ आएगी। संपूर्ण उत्तर भारत (सतलज के भाखड़ा-नांगल बाँध पर नरिभर), पूर्वी भारत (कोसी नदी प्रणाली पर बहिर और पश्चिमि बंगाल की नरिभरता) और संपूर्ण उत्तर-पूर्व (ब्रह्मपुत्र नदी) अब गंभीर खतरे में है।

आगे की राह:

- जल संकट के समाधान के लिये भारत-चीन को वैकल्पिकि उपाय अपनाने को आवश्यकता है। दोनों पक्षों को नदी पर नवीन नरिमाण रोकने की दशिा में तत्काल कदम उठाने चाहिये। वकिंदरीकृत नेटवर्क पर आधारति अपेक्षाकृत लघु चेकडैम, वर्षा-जल संग्राहक झीलों के नरिमाण और परंपरागत जल संग्रहण पद्धतियों को अपनाए जाने की आवश्यकता है।
- भारत को हिमालय से नकिलने वाली नदियों में अपने हसिसे के जलग्रहण क्षेत्र में इष्टतम जल के उपयोग की आवश्यकता है। इसके लिये भारत को अपनी नदी जोड़ो परियोजना पर तीव्र गति से कार्य करना होगा। भारत इन नदियों से संबंधति अपने स्वयं के हसिसे का भी पूरा उपयोग नहीं कर रहा है (उदाहरण के लिये पाकिस्तान के साथ [सधि जल संधि \(Indus Waters Treaty\)](#))।
- नदी के डाउन-स्ट्रीम क्षेत्रों में भारत को अपनी आपदा प्रबंधन प्रणाली को भी मज़बूत करना चाहिये, ताकि भविष्य में किसी संभावति खतरे पर शीघ्र तथा ठोस प्रतिकरिया दी जा सके।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस